

नृत्य कथकली -कोड 061
अंकन योजना
कक्षा -XII (2025 -26)

समय - 2 घंटे

अधिकतम अंक - 30

सामान्य निर्देश:

- निम्नलिखित निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
- इस प्रश्न पत्र में कुल 16 प्रश्न हैं, जिनमें आंतरिक विकल्प शामिल हैं।
- **खंड- क** में 8 प्रश्न बहुविकल्पीय हैं, जिनमें प्रत्येक 1 अंक का है।
- **खंड- ख** में 5 प्रश्न छोटे उत्तर वाले हैं, जिनमें प्रत्येक 2 अंक का है।
- **खंड- ग** में 3 प्रश्न लंबे उत्तर वाले हैं, जिनमें प्रत्येक 6 अंक का है।

क्र.सं.	खंड-क	अंक
1.	B	1
2.	C	1
3.	D	1
4.	B	1
5.	B	1
6.	A	1
7.	B	1
8.	B	1
	खंड-ख	
9.	पचा, काठी, थाड़ी, करी, मिनुक्कु या कलामंडलम कृष्णन नायर 20वीं सदी के एक विश्व प्रसिद्ध कथकली कलाकार हैं। वे कई पुरस्कारों से पुरस्कृत हैं, जिनमें पद्मश्री भी शामिल है। कथकली कला में उनका योगदान उल्लेखनीय है, और वे अब भी उन सर्वश्रेष्ठ कथकली कलाकारों में गिने जाते हैं, जिन्होंने अपनी अभिव्यक्ति से विश्वभर में दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया।	2
10.	श्रिंगार, वीरम, करुणम, हास्यम, अद्भुतम, भयानकम, भीभत्सम, रौद्रम और शांतम या 4 प्रकार, जैसे अंगिकम, वाचिकम, आहार्यम और सात्विकम	2
11.	चेम्बडा, चम्पा, अडन्त, त्रिपुदा, पंचारी, मूरी अडन्त या दक्ष, शिव, सती, वीरभद्र और भद्रकाली	2

12.	बकवधम, कल्याणसौगंधिकम्, किर्मीरा वधम्, कालकेय वधम् या मनोधर्म अभिनय का वह हिस्सा है, जिसमें पात्र प्रदर्शन करने वाला कलाकार अपने आंतरिक भावों के अनुसार पात्र की क्रियाओं को दर्शकों के सामने प्रस्तुत करता है।	2
13.	हस्त पथको मुद्राक्य खडको मुसटी रित्यपि, कर्तरी मुख सप्रश्च सुका तुण्ड कापितकः हंस पक्षच शिखरो हंसस्य पुनरञ्जलि अर्ध चन्द्रश्च मुखुरो ब्रह्मर सूचिका मुखो पलव त्रिपठकश्च मृग सीर्ष होयस्तथा पुनः सर्प सिर सप्रश्च वर्धमानक रित्यते अर्लम् ऊर्णानाबश्च मुखुलो खडकमुगम्। पथक, मुद्राक्यम्, खडकम् मुसटी, कर्तरी मुखम्, सुखतुण्डम्। कपिताकम्, हंस पक्षम्, शिखरम्। हंसस्यम्, आञ्जली, अर्ध चन्द्रम्। मुखरम्, ब्रह्मरम्, सूचिकामुखम्। पलवम्, त्रिपठक, मृगसीर्षम्। सर्पसिरस्, वर्धमानकम्, अर्लम्। ऊर्णानाभम्, मुखुलम्, कडकमुगम्।	2
	या (जब दमयंती अपने सहयोगियों के साथ पार्क में समय बिता रही थी, तब एक हंस (स्वान), जो वास्तव में नल का संदेशवाहक था, उनके पास आया। दमयंती हंस के साथ मित्रता करती है, जब हंस नल का संदेश उसे सुनाता है। हंस दमयंती को सूचित करता है कि वह उसका संदेश नल तक पहुंचाएगा।	

	खंड-ग (दिए गए विकल्पों में से कोई दो प्रश्न हल करें)	
14.	इराइमन थम्पी द्वारा लिखित, कीचकवधम् एक लोकप्रिय नाटक है जो अपने नाटकीय तत्वों और संगीत के लिए जाना जाता है। कहानी महाभारत के एक प्रसंग पर आधारित है, जब पांडव गुप्तवास में विराट के राज्य में रहते हैं। नाटक में पांडव गुप्त रूप से विभिन्न भूमिकाओं में राज्य में प्रवेश करते हैं। युधिष्ठिर, कनका रूप बनकर राजा विराट के साथ शतरंज खेलते हैं। भीम रसोई में बालाल के रूप में कार्य करते हैं। अर्जुन एक किन्नर नर्तक शिक्षक	6

	बृहन्नला के रूप में राजकुमारियों को नृत्य सिखाते हैं। नकुल और सहदेव घोड़ों और गायों के तबलों में कार्यरत होते हैं, जबकि द्रौपदी सैरंध्री के नाम से रानी सुदेष्णा की नौकरानी बनती हैं। एक दिन, कीचक, जो रानी सुदेष्णा का भाई है, सैरंध्री को देखकर मोहित हो जाता है। सैरंध्री भीम से शिकायत करती है, और वे कीचक को मारने के लिए जाल बिछाते हैं।	
15.	केरल कलामंडलम, भारत सरकार द्वारा मान्य कला और संस्कृति का एक विश्वविद्यालय है। यह भारतीय प्रदर्शन कलाओं के अध्ययन और प्रशिक्षण का प्रमुख केंद्र है, विशेष रूप से दक्षिण भारत के राज्यों में विकसित कलाओं का। यह संस्थान भारतपुञ्जा नदी के किनारे, केरल के त्रिशूर जिले के छोटे शहर चेरुथुरुथी में स्थित है। केरल कलामंडलम की स्थापना नवंबर 1930 में कुन्नमकुलम के कक्कड़ हाउस में की गई थी, और छह महीने बाद इसे मुलाकुन्नथुकावु के पास अंबलापुरम स्थानांतरित किया गया। 1936 में यह चेरुथुरुथी गांव में स्थानांतरित हो गया। कोचीन के महाराजा ने भूमि और एक इमारत दान की। बाद में, मोहिनीअट्टम को पुनर्जीवित करने के लिए नृत्य विभाग शुरू किया गया। केरल कलामंडलम, केरल सरकार के सांस्कृतिक मामलों के विभाग के तहत अनुदान प्राप्त संस्थान के रूप में कार्य करता है। 2006 में, इसे भारत सरकार द्वारा 'कला और संस्कृति के लिए मान्य विश्वविद्यालय' का दर्जा दिया गया। कलामंडलम कथकली, मोहिनीअट्टम, कूडियट्टम, तुल्लल, कुचिपुड़ी, भरतनाट्यम, और नांगियार कूथु जैसे शास्त्रीय नृत्य और रंगमंच रूपों में प्रशिक्षण प्रदान करता है। इसके अलावा, पंचवाद्यम नामक पारंपरिक ऑर्केस्ट्रा और विभिन्न तालवाद्य उपकरणों, जैसे चेंडा, मड्डुलम और मिज़ावु में भी प्रशिक्षण दिया जाता है। कलामंडलम प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली 'गुरुकुल प्रणाली' का अनुसरण करता है, जिसमें छात्र शिक्षक के साथ रहते हैं और प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं।	6
16.	भारतीय शास्त्रीय नृत्य भारत में बहुत पहले शुरू हुआ था, जो एक आनंदमयी और उत्सवपूर्ण गतिविधि थी, अक्सर इसे हिंदू देवी-देवताओं की भक्ति के रूप में प्रस्तुत किया जाता था। अधिकांश प्रदर्शन देवताओं की कहानियों और अन्य ऐतिहासिक घटनाओं को दोहराने के लिए तैयार किए जाते हैं। भारतीय शास्त्रीय नृत्य की सभी शैलियां जीवंत, अभिव्यक्तिपूर्ण और आध्यात्मिक होती हैं। प्रदर्शन आमतौर पर त्योहारों, विश्वविद्यालयों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में आयोजित किए जाते हैं। इन शैलियों में प्रदर्शन करने वाले नर्तक आमतौर पर	6

पेशेवर होते हैं, जिन्होंने अपने संबंधित शास्त्रीय नृत्य शैली में वर्षों तक अध्ययन और अभ्यास किया होता है। प्रदर्शन के दौरान, नर्तक उस गाने या संगीत की धुन पर चलते हैं, जो बज रहा होता है। नृत्य और प्रदर्शन कला, इस प्राचीन ग्रंथ में उल्लिखित, आध्यात्मिक विचारों, गुणों और धर्मग्रंथों के सार को व्यक्त करने का एक रूप है। प्रदर्शन कला, इस प्राचीन ग्रंथ के अनुसार, आध्यात्मिक विचारों, गुणों और शास्त्रों के सार का एक रूप है। जबकि नाट्य शास्त्र हिंदू परंपरा में एक सम्मानित प्राचीन ग्रंथ है, इसके अलावा अन्य कई प्राचीन और मध्यकालीन संस्कृत नृत्य-नाट्य से संबंधित ग्रंथ हैं जो प्रदर्शन कला के शास्त्रीय संग्रह पर और विस्तार से चर्चा करते हैं, जैसे कि अभिनय दर्पण, अभिनव भारती, नाट्य दर्पण, भावना प्रकाश और कई अन्य। "क्लासिकल" (संस्कृत: "शास्त्रिया") शब्द प्राचीन भारतीय शास्त्र-आधारित प्रदर्शन कला को दर्शाता है। हालाँकि, यह कथक, मणिपुरी और छऊ के लिए सच नहीं है, क्योंकि इनकी अपनी विशिष्टता है। कथक को मस्जिदों के आंगनों में भी प्रस्तुत किया जा सकता था और इसमें मुस्लिम तत्व थे, जबकि मणिपुरी में हुए लांगलोन नामक शैली थी, जो युद्ध कला पर केंद्रित थी। मणिपुरी की तरह, छऊ में भी युद्ध कला के तत्व थे।	
---	--